अध्याय–15

हमारा जंगल

759DLQ

कल हम वाल्मीकि अभयारण्य जाएँगे। इसके लिए गुरुजी ने हमें कुछ तैयारियाँ करने को कहा है। हम सबने खाने की सामग्री, झोला, पेंसिल, खाली कागज, रबड़, कैंची, रस्सी, रुई, डिटोल आदि की सूची बना ली है। सभी को अलग–अलग सामान लाने की जिम्मेदारी दी गई है।

सभी बच्चे कहाँ घूमने जानेवाले है?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

उसके लिए उन्होंने क्या–क्या तैयारियाँ की हैं?

———————————————————

———————————————————

अगले दिन सवेरे जल्दी ही हम अभयारण्य के लिए रवाना हो गए। सभी ने बस में बहुत मज़े किए। बस में गुरुजी ने बताया कि हम सब अभी वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान जो एक वन्य जीव अभयारण्य है, देखने जा रहे हैं। यहाँ मुख्य रूप से बाघ का संरक्षण किया गया है। अभयारण्य जंगल का वह हिस्सा है जहाँ जंगली जानवर

बिना किसी खतरे के, खुले घूम सकते हैं। हम उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाते हुए इसकी सैर भी कर सकते हैं।

अभयारण्य पहुँच कर गुरुजी ने हम सभी को गंदगी नहीं फैलाने तथा जानवरों को परेशान नहीं करने के बारे में समझाया। इसके बाद हम सभी छोटी–छोटी गाड़ियों में बैठकर अभयारण्य घूमने

निकले। हमने साल, शीशम, खैर (कत्था), सेमल, जामुन आदि के पेड़ देखे। अचानक गाड़ी रुक गई। हमने देखा कि बहुत सारे हिरण एक साथ पानी पी रहे थे। सबको बहुत अच्छा लगा। कुछ बच्चों ने तो उनकी तस्वीर भी ली।

अचानक हिरणों के झुंड में हलचल हुई। गाड़ी के ड्राइवर ने हमें शांत रहने का इशारा किया। थोड़ी देर बाद का नज़ारा तो आश्चर्यचकित करनेवाला था। हमने देखा कि झाड़ियो में से अचानक एक शेर निकला। हम सभी भौंचक्के रह गए। हिरणों का झुंड भी कुछ घबराया–सा था और वे इधर–उधर भागने लगे।

आपको क्या लगता है कि हिरणों के झुंड में हलचल क्यों हुई?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

ड्राइवर ने बताया कि इस अभयारण्य में कभी–कभार ही ऐसा नज़ारा देखने को मिलता है। क्योंकि यहाँ बाघों की संख्या बहुत कम रह गई है। थोड़ी देर बाद हम वहाँ से आगे बढ़े और जंगल में एक ऐसी जगह जाकर रुके जहाँ खुला मैदान था। वहीं बैठकर गुरुजी से बातें करने लगे। हमने उनसे जंगल के बारे में बहुत कुछ जाना।

वहाँ से हमने कुछ पेड़–पौधों की पत्तियाँ, फूल इकट्ठा किए और गुरुजी से उनके बारे में प्रश्न पूछकर उनके बारे में जाना। लौटते समय भी हमने बहुत सारे जानवर देखे। जैसे– बन्दर, खरगोश,साँप, लोमड़ी, अजगर।

अगले दिन कक्षा में जो बच्चे अभयारण्य घूमने के लिए नहीं जा पाए थे उनमें क्या–क्या हुआ जानने की बड़ी उत्सुकता थी।

सीमा ने पूछा– तुम सबने कल वहाँ क्या–क्या देखा?

चीनू ने बताया कि जैसे ही हम वहाँ पहुँचे हमने जंगल देखा। उसके अन्दर जाने पर हमने एक बाघ और हिरण के झुंड को आमने–सामने देखा।

सीमा– जंगल क्या होता है? क्या वह हमारे आम के बगीचे जैसा होता है?

तभी गुरुजी बोले– नहीं जंगल में अलग–अलग तरह के पेड़–पौधें और तरह–तरह के जीव–जन्तु होते हैं।

बच्चों ने जंगल में क्या–क्या देखा?

_____

_____

कौन सा नजारा था जिसको देखकर सभी दंग रह गए?

_____

_____

जंगल, बगीचे से कैसे अलग है? लिखिए।

जंगल	बगीचा

छुईमुई ने बताया– ''हम तो जंगल के पास ही रहते हैं। सुबह–सुबह हम जंगल जाते हैं और वहाँ से जलावन और कभी–कभी जामुन और शहद भी लाते हैं।''

जंगल से हमें क्या–क्या मिलता है? लिखिए।

_____

_____

राहुल– लेकिन मेरे पिताजी ने बताया है कि जंगल खत्म हो रहे हैं और उनमें रहनेवाले जानवरों की संख्या भी तेजी से घट रही है। अतः जंगल से कुछ भी लाना अपराध ा है। ऐसा करते हुए पकड़े जाने पर सज़ा भी मिलती है।''

अगर राहुल की बात सही है तो फिर छुईमुई का परिवार जलावन व अन्य चीज़ों की व्यवस्था कैसे करेगा? अपने दोस्तों के साथ चर्चा करके लिखिए।

_____

_____

_____

अगर सारे जंगल खत्म हो जाएँगे तो क्या होगा?

_____

_____

_____

जंगलों को खत्म होने से बचाने के लिए क्या–क्या किया जा सकता है?

_____

_____

_____

धरहरा की परम्परा

सुनो कहानी धरहरा की परम्परा की, जिसने देश और दुनिया की निगाह को अपनी ओर खींचा है। भागलपुर जिले के नवगछिया प्रखंड में बसे इस छोटे से गाँव ने पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता एवं बालिकाओं की सामाजिक महत्ता स्थापित करने में अद्‌भुत मिसाल कायम की है।

एक ऐसा समाज जो बेटे के जन्म को प्राथमिकता देता है तथा बेटियों के जन्म पर अफसोस करता है; वैसे समाज में धरहरा के लोगों ने बेटियों के महत्त्व को समझते हुए एक नई परम्परा की शुरुआत की है। उन्होंने बेटियों के जन्म को पर्यावरण संरक्षण का अवसर मान इसे एक उत्सव का रूप दे दिया है।

धरहरा गाँव में जब भी किसी के घर में बेटी जन्म लेती है तो वे न केवल खुशी से भर उठते हैं; बल्कि इस शुभ अवसर पर किसी विशेष स्थान पर कम से कम 10 पौधे लगाते हैं। अपनी बेटी और लगाए हुए वृक्ष को वे बड़े स्नेह और प्यार से सहेजते हैं। इससे बेटी और वृक्ष दोनों का एक साथ विकास होता है। जिस तरह से बेटियाँ सामाजिक बदलाव का माध्यम बनती हैं, स्वस्थ समाज की रचना में सहायक होती है उसी तरह से वृक्ष विलुप्त होते जंगल को बचाने और बढ़ाने में सहायक होते हैं। इस प्रकार बेटियाँ और वृक्ष दोनों समाज और परिवार में समृद्धि का वाहक बनते हैं।

धरहरा की इस परम्परा से प्रभावित होकर लोग आज बेटी और वृक्ष दोनों के संरक्षण के प्रति संवेदनशील हुए हैं। इतना ही नहीं, बिहार के मुख्यमंत्री भी इस परम्परा से प्रभावित हो उसे प्रोत्साहन देने धरहरा गए। सचमुच धरहरा ने जो परम्परा शुरू की है, उसे हम सभी अपनाएँ तो हमारा पर्यावरण और समाज दोनों सशक्त होंगे।

आइए, हम सब संकल्प लें कि हम भी और वृक्ष लगाएँगे, अपने गाँव को धरहरा जैसा बनाएँगे।